B.A. PART – Ist

हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय पत्र

मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य

3. प्रश्न:- रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं दरबारी संस्कृति

उत्तर:- युगीन साहित्य की गतिविधि तत्कालीन परिस्थितियों से परिचालित होती है, अतः रीतिकालीन प्रवृत्तियों का विश्लेषण करने से पूर्व इस काल की विभिन्न परिस्थितियों का विवेचन करना आवश्यक है। रीतिकाल की समय-सीमा संवत् 1700 विक्रमी से 1900 विक्रमी तक मानी गयी है। 200 वर्षों की इस दीर्घ कालावधि में रचित रीतिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियों युगीन परिस्थितियों के संदर्भ में हीं देखी जानी चाहिए। अतः रीतिकालीन प्रवृत्तियों की पृष्ठभूमि में हमें इस काल की राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का लेखा-जोखा कर लेना चाहिए।

(1) राजनीतिक परिस्थितियाँ – रीतिकाल मुगलों की सत्ता के चरम वैभव का काल है। मुगल साम्राज्य का चरम उत्कर्ष, उत्तरोत्तर ह्रास और फिर पतन भी इसी काल में हुआ। शासकों में आत्म-प्रशंसा का मोह एवं श्रृंगारिक मनोरंजन की चाह थी। ताजमहल एवं मयूर सिंहासन जैसी भव्य कृतियों का निर्माण हो चुका था। उत्तर भारत के अधिकांश राजपूत राजाओं एवं सामंतों ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी। मुगलों का शासन दक्षिण में अहमदनगर, बीजापुर एवं गोलकुण्डा तक फैल गया था। नादिरशाह एवं अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण क्रमशः 1739 एवं 1757 ई० में हुए, जिसमें मुगल साम्राज्य की कमर टूट गयी। कालाँतर में अंग्रेजों ने

P.T.O

2.

बक्सर की लड़ाई में शाह आलम को पराजित कर मुगल साम्राज्य को अपनी कठपुतली बना लिया।

(2) सामाजिक परिस्थितियाँ :- नैतिकता का पतन की ओर न राजा ध्यान देता था, न प्रजा ही नैतिक नियमों का पालन करती थी। सामन्तवाद का बोलबाला होने से समाज में सामन्तशाही के दोष आ गये थे। सुरा और सुंदरी में डूबे हुए विलासीजन काम-कला की शिक्षा को ही सबसे बड़ी उपलब्धि मानते थे। सुंदर लड़कियों का अपहरण करवा लेना, वेश्याओं को सम्मान देना एवं मनोरंजन के अनेक घटिया साधनों में लीन रहना तत्कालीन समाज की गिरी हुई दशा को सूचित करता है। जनसाधारण में अंधविश्वास एवं रूढ़ियाँ व्याप्त थी। जनता प्रायः अशिक्षित थी तथा बाल-विवाह प्रचलित थे। धनी सामंत वर्ग के लोग गरीबों पर मनमाने अत्याचार करते थे। बहुविवाह की प्रथा प्रचलित थी तथा परिवारों में अशांति रहती थी।

(3) धार्मिक परिस्थितियाँ :- अकबर एवं जहाँगीर की उदार धार्मिक नीतियों के कारण हिन्दू और मुसलमानों में जो निकटता आयी थी वह औरंगजेब जैसे धर्मान्ध एवं कट्टर शासक के राज्य में समाप्त हो गयी थी। महंत एवं पीठाधिकारी लोभवश राजाओं एवं सामंतों को गुरुदीक्षा देकर भौतिक सुविधाएँ प्राप्त करने की ओर उन्मुख हो चुके थे।

P.T.O

राधा कृष्ण की शृंगार लीलाओं को भक्ति समझा जाने लगा था तथा मंदिरों में भी नाच-गाने के आयोजन भक्ति के नाम पर होने लगे थे। इस्लाम धर्म में रूढ़िवादिता बढ़ गयी थी। कुरान को याद कर लेने एवं नमाज पढ़ने को ही धर्म समझा जाने लगा था। लोग अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए भी मंदिर-मजारों पर जाने लगे थे। मंदिर-मठों में धर्म के नाम पर विलास-क्रीड़ाएँ होने लगी थी।

4. साहित्यिक परिस्थिति :- साहित्य और कला की दृष्टि से रीतिकाल में पर्याप्त प्रगति हुई। इस काल में अलंकरण, कलात्मकता की प्रधानता प्रत्येक क्षेत्र में थी। कवियों और कलाकारों को राजदरबारों में ~~प्रश्रय~~ प्रश्रय देकर अच्छी वृत्ति दी जाती थी तथा उनकी गणना समाज के प्रतिष्ठित लोगों में होती थी। दरबारी कवि होने के कारण इस काल में आश्रयदाताओं की प्रशंसा एवं शौर्य के अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन प्रमुखता प्राप्त कर चुके थे। कवियों का ध्यान जनसाधारण की समस्याओं को चित्रित करने की ओर नहीं गया, परिणाम स्वरूप कविता उच्च वर्ग की भावनाओं के अनुरूप शृंगार एवं विलास के पंक में फँस गयी। इस काल में काव्य-भाषा के रूप में ब्रजभाषा प्रतिष्ठित हो गयी थी तथा सभी कवि इसी भाषा में काव्य-रचना करते थे। राजकाज की भाषा फारसी थी, जिसमें अलंकरण की प्रवृत्ति प्रधान थी। शाहजहाँ को 'कसीदे'

P.T.O

(प्रशंसापरक गीत) सुनने का शौक था। अत: उसके दरबार में प्राय: ऐसे कवि थे जो कसीदे सुनाया करते थे। उसी के अनुकरण पर अन्य देशी राजा-नवाबों के राज्य में भी प्रशंसापरक काव्य रचने की प्रवृत्ति पनपती गयी।

रीतिकाल के कवि अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए काव्य रचना करते थे। वे कवि दंगलों के आयोजकों को अपनी बुद्धि का लोहा मनवाने हेतु चमत्कार पूर्ण काव्य-रचना करने में ही कवि-कर्म की सफलता समझते थे काव्यशास्त्र की जानकारी को प्रदर्शित करना भी उनका एक उद्देश्य था। वे कवि और आचार्य दोनों ही बनना चाहते थे, यही कारण है कि उन्होंने लक्षण-ग्रन्थों की रचना प्रचुर परिमाण में की है। एक प्रकार के 'कविराज' तो रईसों के मुख में मकर ध्वज झोंकते हैं, दूसरे प्रकार के 'कविराज' कान में मकर ध्वज रस की पिचकारी देते हैं।"

रीतिकालीन कवि वासना के रस में आकंठ डूबकर, समाज को ऐसा काव्य प्रदान कर रहे थे जो श्रृंगार के संकुचित दायरे में घिरा हुआ था। हाव-भाव, हेला, नायिका भेद और अलंकार निरूपण में ही वे अपनी बुद्धि लगा रहे थे। उनका शास्त्र-ज्ञान भी नवीनता से युक्त न होकर संस्कृत काव्यशास्त्र का अनुकरण मात्र था।

P.T.O

## अभ्यासार्थ प्रश्नावली

प्रश्न 1. रीतिकालीन काव्य की परिस्थितियों पर प्रकाश डालिये ।

प्रश्न 2. रीतिकालीन कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए दरबारी संस्कृति को स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्न 3. "रीतिकालीन कविता तत्कालीन परिस्थितियों की उपज है।" इस कथन पर प्रकाश डालिए ।

प्रश्न 4. रीतिकाल की साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए ।

पता
डॉ० समदर्शी कुमार
(B.R.A.B.U.M) — हिन्दी विभाग- D.R.A.P.C
मो०न० - 7909046087
दिनांक -19.01.2022